अरुणिमा : मार्च 2021

प्रोग्रेसिव एज्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय

(स्वायत्त), पुणे-४११००५, महाराष्ट्र

हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

" अरुणिमा"

(मासिक पत्रिका)

मार्च : २०२१

प्रकाशक :
प्रा. शामकांत देशमुख,
डॉ. राजेंद्र झुंजाराव
संपादक : डॉ. प्रेरणा उबाळे
सहायक : अनिसा शेख़

1.लघुकथा : .....और मैं कुछ ना कर सका!

दिनकर चौगुले,
एम.ए. हिंदी साहित्य,द्वितीय वर्ष

कुछ 30-35 साल पहले की बात है।
रहते थे गाँव में,
बिरादरी में...
मेरी शादी के कुछ दिन पहले, मेरे तीन चाचाओं का बिरादरी के एक चचेरे चाचा से झगड़ा हुआ। झगडे का कारण भी मामूली था। बच्चो में, बच्चों का, बच्चों-सा झगड़ा हुआ था। बात बड़ों में चली गयी। फिर बड़ों का हुआ झगड़ा । आना-जाना , बोल-चाल बंद हो गयी । बच्चे कुछ देर बाद खेलने भी लगे एक साथ।
लेकिन बड़े लोग नही। अहंकार बढ गया था।
कुछ दिन बाद मेरी शादी थी।
शादी के लिए दुल्हन के घर, दूसरे गाँव जाना था।
बिरादरी में मेरी माँ सबको न्यौता दे रही थी, शादी में आने का, नाचने का, गाने का आग्रह कर रही थी। सब तैय्यार भी थे।
बिरादरी में क्या पूरे गाँव में सबसे ज्यादा मैं ही पढा- लिखा था ।मेरी नौकरी भी सरकारी बैंक में थी। गाँव में वैसे मेरा रोब था।
रात को तीन चाचा मेरी माँ से मिले और बोले, "जिनके साथ झगडा हुआ था वे चचेरे चाचा या उनके घर का कोई भी, गर शादी में आनेवाले है तो हम नहीं आयेंगे 1 माँ पैर पडने लगी, हाथ जोड़ने लगी, लेकिन वो नहीं माने। बात फैल गयी। जिनके साथ झगड़ा हुआ था वो चचेरे चाचा की बीवी- चाची माँ से चोरी से मिली। माँ रोने लगी। तो उसने समझाया, हम नही आयेंगे। वो तेरे सगे हैं उनको लेकर जा। बेटे की शादी कर, मायूस मत हो। माँ और वो चचेरी चाची में बहुत प्यार था।
बड़ी बिरादरी होकर भी शादी में आधे से भी कम लोग आये। माँ गाँव के लोगों के सवालों का जबाब देते देते थक गयी।
शादी हो गयी। बारात घर आ गयी। चचेरे चाचा तथा उनके घरवाले शादी में नहीं आये।
.....और मैं कुछ ना कर सका।

2.लघुकथा : शमीम खान
एम. ए. हिंदी साहित्य,द्वितीय वर्ष

•इंसान की कीमत•

एक बार एक टीचर क्लास में पढ़ा रहे थे । बच्चों को कुछ नया सीखाने के लिए टीचर ने जेब से 100 रुपये का नोट निकाला ।

अब बच्चों की तरफ वह नोट दिखाकर कहा-क्या आप लोग बता सकते हैं कि यह कितने रुपयों का नोट है ?

सभी बच्चों ने कहा - "100 रुपये का।"

टीचर - "इस नोट को कौन - कौन लेना चाहेगा?"

सभी बच्चों ने हाथ खड़ा कर दिया।

अब उस टीचर ने उस नोट को मुट्ठी में बंद करके बुरी तरह मसला जिससे वह नोट बुरी तरह कुचल-सा गया।

अब टीचर ने फिर से बच्चों को नोट दिखाकर कहा कि "अब यह नोट कुचल - सा गया है अब इसे कौन लेना चाहेगा ?"

सभी बच्चों ने फ़िर से हाथ उठा दिया।

अब टीचर ने कहा कि" बच्चों आज मैंने तुमको एक बहुत बड़ा पाठ पढ़ाया है। यह 100 रुपये का नोट था, जब मैंने इसे हाथ से कुचला तो ये नोट कुचल गया लेकिन इसकी कीमत 100 रुपये ही रही, इसके बाद जब मैंने इसे जूते से मसला तो ये नोट गंदा हो गया लेकिन फ़िर भी इसकी कीमत 100 रुपये ही रही। ठीक वैसे ही इंसान की जो कीमत है और इंसान की जो काबिलियत है वह हमेशा वही रहती है। आपके ऊपर चाहे कितनी भी मुश्किलें आ जाये ,चाहें जितनी मुसीबतों की धूल आपके ऊपर गिरे लेकिन आपको अपनी कीमत नहीं गवानी है। आप कल भी बेहतर थे और आज भी बेहतर है।"

@The_Best_Motivation_14
कभी भी, इस खोज में मत उलझों कि
भगवान है या नहीं ! हमेंशा, खोज ये
रखें कि आप खुद इन्सान हैं या नहीं !
@the_best_motivation_14

कविता- उतनी दूर मत ब्याहना बाबा।

कवि- निर्मला पुतुल

बाबा!
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने ख़ातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े
तुम्हे
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज़्यादा
ईश्वर बसते हों
जंगल नदी पहाड़ नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन
वहाँ तो कतई नही
जहाँ की सड़कों पर
मान से भी ज़्यादा तेज़ दौड़ती
हों मोटर-गाडियाँ
ऊँचे-ऊँचे मकान
और दुकानें हों बड़ी-बड़ी
उस घर से मत जोड़ना मेरा
रिश्ता
जिस घर में बड़ा-सा खुला
आँगन न हो
मुर्गे की बाँग पर जहाँ होती ना
हो सुबह
और शाम पिछवाडे से जहाँ
पहाडी पर डूबता सूरज ना दिखे
।
मत चुनना ऐसा वर
जो पोचाई और हंडिया में
डूबा रहता हो अक्सर
काहिल निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लड़कियाँ उड़ा
ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी ख़ातिर
कोई थारी लोटा तो नहीं
कि बाद में जब चाहूँगी बदल
लूँगी
अच्छा-ख़राब होने पर
जो बात-बात में
बात करे लाठी-डंडे की
निकाले तीर-धनुष कुल्हाडी
जब चाहे चला जाए बंगाल,
आसाम, कश्मीर
ऐसा वर नहीं चाहिए मुझे
और उसके हाथ में मत देना मेरा
हाथ
जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़
नहीं लगाया
फसलें नहीं उगाई जिन हाथों ने
जिन हाथों ने नहीं दिया कभी
किसी का साथ
किसी का बोझ नही उठाया
और तो और
जो हाथ लिखना नहीं जानता
हो "ह" से हाथ
उसके हाथ में मत देना कभी
मेरा हाथ
ब्याहना तो वहाँ ब्याहना
जहाँ सुबह जाकर
शाम को लौट सको पैदल
मैं कभी दुःख में रोऊँ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते
तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण
विलाप.....
महुआ का लट और
खजूर का गुड़ बनाकर भेज
सकूँ सन्देश
तुम्हारी ख़ातिर
उधर से आते-जाते किसी के
हाथ
भेज सकूँ कद्दू-कोहडा,
खेखसा,बरबट्टी,
समय-समय पर गोगो के लिए
भी
मेला हाट जाते-जाते
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर-गाँव का हाल-
चाल
चितकबरी गैया के ब्याने की
ख़बर
दे सके जो कोई उधर से गुजरते
ऐसी जगह में ब्याहना मुझे
उस देश ब्याहना
जहाँ ईश्वर कम आदमी ज़्यादा
रहते हों
बकरी और शेर
एक घाट पर पानी पीते हों जहाँ
वहीं ब्याहना मुझे!
उसी के संग ब्याहना जो
कबूतर के जोड़ और पंडुक
पक्षी की तरह
रहे हरदम साथ
घर-बाहर खेतों में काम करने से
लेकर
रात सुख-दुःख बाँटने तक
चुनना वर ऐसा
जो बजाता हों बाँसुरी सुरीली
और ढोल-मांदर बजाने में हो
पारंगत
बसंत के दिनों में ला सके जो
रोज़
मेरे जूड़े की ख़ातिर पलाश के
फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
की शुभकामनाएं

MARCH
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
की आपको
हार्दिक शुभकामनाएं!
www.Ajabgajabjankari.com

-हिंदी विभाग परिवार